विषय- संस्कृत, डॉ० ओम प्रकाश आर्य
बी० ए० स्नातक (प्रतिष्ठा) महाराजा कॉलेज, आरा
तृतीय वर्ष, षष्ठ पत्र दिनांक- 27/05/2020
व्याकरण एवं भाषाविज्ञान

भाषा की उत्पत्ति (पूर्व से आगे- क्रमशः)

(5) **श्रम ध्वनि सिद्धान्त :-**

इस सिद्धान्त को मनोभावाभिव्यक्ति-वाद का ही रूपान्तर कह सकते हैं। जहाँ मनोभावाभि-व्यक्ति सिद्धान्त में भाषा सम्बन्ध मनोभावों के आवेग से उत्पन्न ध्वनि-प्रतीकों से जोड़ा गया है वहाँ श्रम-ध्वनिवाद में भाषा का सम्बन्ध शारीरिक श्रम के परिणामस्वरूप जन्म लेने वाले ध्वनिप्रतीकों से जोड़ा गया है। इस वाद की स्थापना न्वायरे (Noire) ने की थी और इंग्लिश में उसे yo-he-ho-Theory कहा जाता है। मनुष्य जब कोई ऐसा कार्य कर रहा होता है जिसमें अतिरिक्त शारीरिक श्रम की

आवश्यकता पड़ती है तो उस समय श्वास प्रक्रिया काफी तेज हो जाती है जिसके परिणाम स्वरूप स्वर-तन्त्रियों में कम्पन बहुत अधिक बढ़ जाता है और विशेष प्रकार की ध्वनियाँ मुँह से निकलती है। इस सिद्धान्त के अनुसार ऐसा माना जाता है कि मनुष्य को भाषा का प्रयोग करने की प्रेरणा इन्हीं श्रम मूलक ध्वनियों से मिली।

इस सिद्धान्त के विरुद्ध भी सबसे बड़ी आपत्ति वही उठाई जाती है जो मनोभावाभिव्यक्तिवाद के विरुद्ध भी सबसे बड़ी आपत्ति वही उठाई जाती है जो मनोभावाभिव्यक्तिवाद के विरुद्ध की जाती है। इस सिद्धान्त में जिस प्रकार की शब्दावलि से भाषा की उत्पत्ति मानी जाती है वह भाषा के अत्यन्त स्वल्प अंश की पूर्ति करती है। इसलिए असीम भाषा कलेवर से निर्मित इस स्वल्प शब्दावलि के आधार पर भाषा की उत्पत्ति को तर्कसंगत नहीं ठहराया जा सकता।

⑥ सम्पर्क सिद्धान्त :-

ऐसा कहना अनुचित न होगा कि भाषा की उत्पत्ति के प्रश्न के सम्बन्ध में सबसे अधिक गम्भीर प्रयास इस सिद्धान्त के माध्यम से हुआ है जिसकी स्थापना मनोविज्ञान के प्रतिष्ठित विद्वान् जी० रेवेज (G. Revec) ने की है। इस सिद्धान्त में मनुष्य की सम्पर्क करने की सहज प्रवृत्ति को आधार बनाकर विचार सरणि का प्रतिपादन

Scanned with CamScanner

किया गया है। रेवेज़ के अनुसार सम्पर्क (contact) करना मानव की सहज प्रवृत्ति है। प्रारम्भ से ही मनुष्य अपनी इस प्रवृत्ति के वशीभूत होकर अनेक कार्यकलाप करता रहा है। भाषा का विकास भी रेवेज़ ने इसी प्रवृत्ति का परिणाम माना है। मनुष्य की इस सम्पर्क-प्रवृत्ति का आकलन रेवेज़ ने दो स्तरों पर किया है। प्रथम स्तर में मानव में भावनात्मक सम्पर्क ही प्रबल रहा होगा, दूसरे स्तर में पहुँचकर विचार के पटल पर भी सम्पर्क हुआ होगा। भाषा का विकास भी इन्हीं दो सम्पर्क स्तरों पर हुआ, भावनात्मक सम्पर्क से भाषा के प्रारम्भिक रूप का ही विकास हुआ, एवं विचारात्मक सम्पर्क के स्तर पर भाषा का परिनिष्ठित रूप विकसित हुआ। पहले स्तर पर भूख के कारण चिल्लाना, दुःख में सिसकना, क्रोध में दहाड़ना, कामेच्छा के समय भावुक ध्वनियों का निःसरण आदि ध्वनियाँ प्रयोग में लाई जानी प्रारम्भ हुई। यद्यपि आपाततः इस सिद्धान्त में कुछ शक्ति दिखाई देती है, तथापि केवल मनोविज्ञान पर आधारित रहने के कारण इसे एकांगी भी ठहराया जा सकता है।

Scanned with CamScanner